

यादावकायः ॥ दक्षिण ॥ वृगनस
मयकायं वलिकायथानस ॥ यादि
थाय ॥ ॥ वलकिमर्तकायक ॥ ॐ
तिथ्यादङ्गीकृत्याविधिः ॥ १ ॥
तथावङ्गीयाविधानं ॥ धृष्टिकास्त
नादि वंतात् ॥ गितत्वंतावम्य ॥

अज्ञादिवाक् ॥ यजमानस्य विवाहस्य
पूर्वपूजिकारुत्तथागतनिमित्तार्थ ॥ शु
ब्रनमस्कावादिनामः ॥ पूर्ववत् ॥ अ
स्यपूजाकर्तृ ॥ श्रीसमर्थान् आवाहन ॥
शिदवादि ॥ इधकृत्तयाः (र्थपूजन
॥ जेजुतासनायनमः ॥ जेजु सः ॥ ह

वस्तुनाधिवत्तयकाँकाँकू कृत्तयात्ताय
पाइकाँपूजयामि ॥ शिधा ॥ वत्तग ॥ वलि
ततापूजिकादगक्रियाँकावयत्त ॥ विना
वत्तमत्तपूजा ॥ इँकाँकयालीनत्तनवा
यनमः ॥ पूजन ॥ इँकाँपूजिकारुत्तथा
गनायत्ताहो ॥ एववलि ॥ ॥ मृत्तयाज्ज

कमलमालकायुजा॥वलि॥यजमानया
रुद्रद्वेतायामालकायुजा॥वलि॥ष
उ०मनयुजा॥वलि॥सुसुनकरपाल
यायियाजलि॥षउ०॥वलि॥॥वः
उ०षष्ठिथानिनीवलि॥ऊयावविजः
यावेवति॥रुकावसकानकूठनपू

जा,वलि॥त्याकमहावलिनधूनक॥
आवाक॥धूपदीपनेवय॥रुध
रुद्रयाथेऊपकायमालका॥अ
उगन्धदिवाकनमरु॥कमात्रुति
नयन॥एकानक॥वृषियुजा॥या
साग॥रुधरुद्रयाथेयजमानन

पूजिका स्नान चन्दन सिंदूर सल्लनम्बा
ननकुनके आचार्यनिषेधपाव ॥ धनोत्ति
यजमाननमल नाशितके ॥ सिमिलाम
सिमावातयाव कृपयावकावशापाल
धनं यजमानननके ॥ आचार्यनिषे
स्तिवोक्तपदपै रुतप्रामनयानके ॥ नो

सिचके ॥ लपत हायाडा कलंकपूजा
याडाडा कृप ॥ दक्षिण ॥ वृकनकाय
वलिधाय ॥ कननमृस कृप साकी
धाय ॥ वल क्षिमन कृपके ॥ वृत्तिवृ
दगी कृकृयाविधानः ॥ ततः ४ पो
रुमासी कृकृयाविधान ॥ पथमतः

दीत २

पूषिकास्ताने विधाय ॥ चन्दनादि सिन्दूर
यहापपूषा माभाय ॥ ततः क्रिनाचम ॥ अ
घादियजमानस्य विवाहसंपूर्णपूषिकान्
प्राप्तन० सुवत्यर्वननिमित्तं कलमारु
र्घ ॥ अथ ॥ उति उन्नतमस्का न विधाय ॥
पूर्ववत्या संकृत्वा जलार्घपाशादिपूजां

विधाय रत उद्या संपूजां कुर्यात् ॥ अ
सक्तर्तन आवाहन ॥ त्रिद वादिपूजा ॥
कृधकृद्रया ॥ यता सनायनम ॥ अज
स ० ० ० देवकाना विषतय कां कां कूं कूं
पालाय पाइका पूजया मितम ॥ विधा ॥
अज ॥ कलि ॥ ॥ ततः पूषिकादज

किया का नयन ॥ विनयनमस्तु ॥ ॐ
ही वलन नवायनम ॥ पूजन ॥ ॐ
नमस्तुति का अनया नयनम ॥ ॐ
लि ॥ ॐ संहार नवायनम ॥ पूजन
॥ ॐ ॐ ॐ मिखाये पुति का नूतन
न कलहिकायनम ॥ ॐ वलि ॥ ॐ

ॐ कववायपुति काये नम ॥ पूजन ॥
ॐ ॐ ॐ कववायवतवधनायनम ॥
ॐ वलि ॥ गयगीवदानी निखाया ॥
ॐ वलि ॥ ॐ ॐ नरुतयाय वीषट
पूजन ॥ ॐ ॐ ॐ नूतनायनम पुति
का विवाहायनम ॥ विवाहायाहा

यतिमनामनवलि ॥ ॥ यिहि पायऊमान
 दीक्षातागसाधमकुनतनमाल ॥ ५४५
 कायरुद ॥ प्रवेष्टुगनपूजन ॥ यिहि पा
 यऊमानदीक्षामलागसाधमकुशकाम
 माल ॥ कानाकमनमालकाजिगीजलि
 वलि ॥ यऊमानयाँ छुदेवतासमाल

काठियाऊलि ॥ षठ्ठनवलि ॥ चक्रान
कठनठियाऊलि, षठ्ठन ॥ वलि ॥ कठु४
वठियाणिनीवलि ॥ रुकानसकावनपठ
जावलि ॥ लाकमहावलि ॥ आवाधक ॥
धूप, दीप, नेवद्य, जप, छिदवधानि
नी, ॐ बुद्धवतायामालका ॥ कठया

धाव १० ॥ स्नाय ॥ अणुगन्धनिवाकन
मह ॥ तर्पण ॥ एकानेक ॥ वृषिपूजा
पाशाग ॥ ॥ हृथकृक्या (र्थ, यजम)
ननपूठिकास्तान, चन्द सिद्धन, सग्न
नखाननचुचक, आचार्यनपदप ॥
धनैलियजमानन (यंजंमोनेन) चव

नलास, जा, वृलिवालाक, ला, वातस्थ
ह ॥ नासिचक, जावाहृपयाचक ॥
यजमाननखपालधाल, नकह, आ
चार्यनखकिवाक, यदप, अन्नप्राण
नयाचक ॥ नासिचक ॥ लपन, वाया
उ, कलैकपूजायावाडा काय ॥ ॥



आर्य समाज

1020

ADDA ARCHIVES



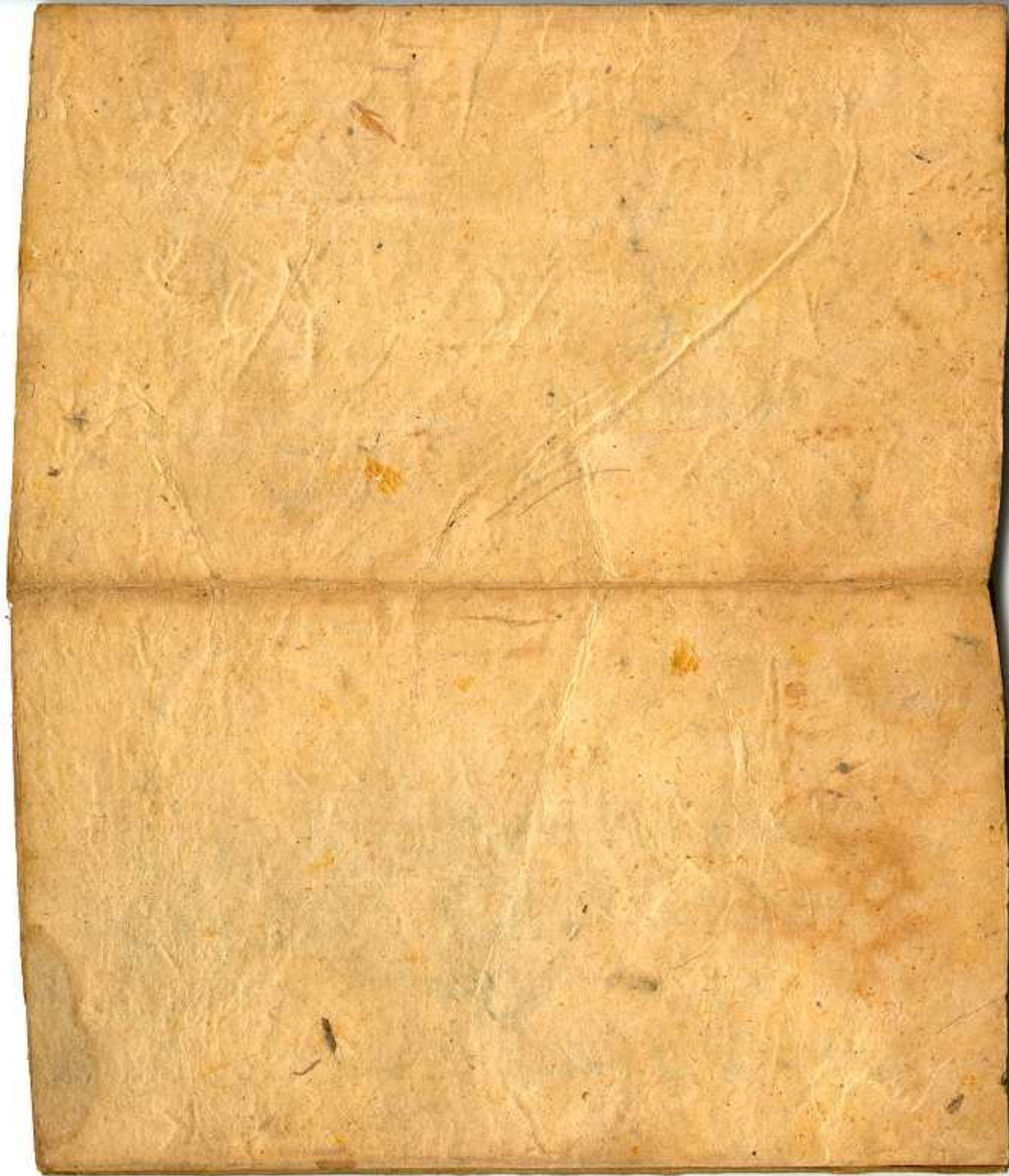


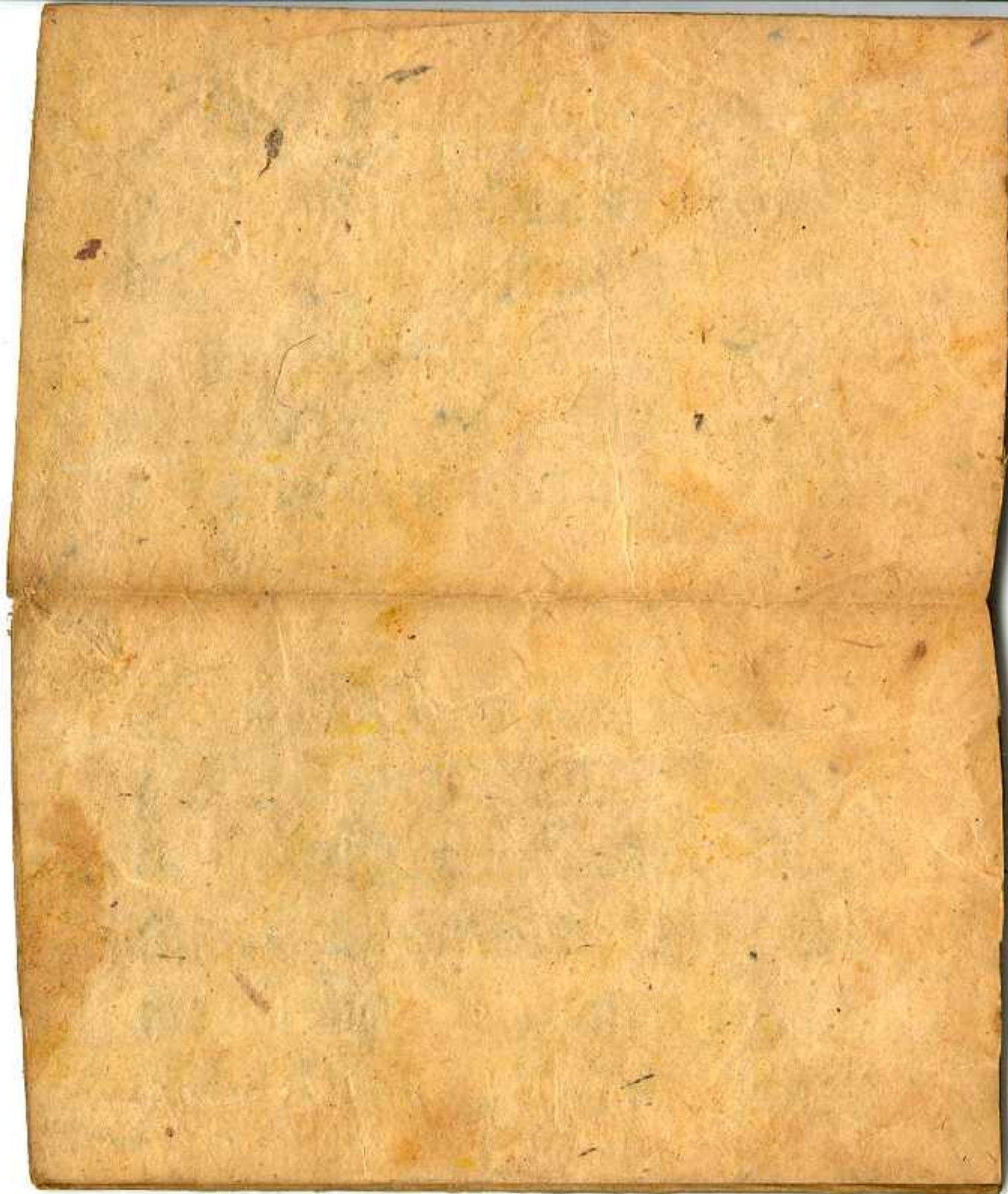
दक्षिण ॥ वृक न काय ॥ वलि विसर्जन था
नल प्रस काय ॥ साक्षी थाय ॥ वल कि
मत काय क ॥ ध क केन स चा रु ल ना
व, सा कन, लालू के नि क प्र स वृ य
कल काय ॥ सू वा य माल व, पि पू त
क माल ॥ य ज माना दि, वि हि या प

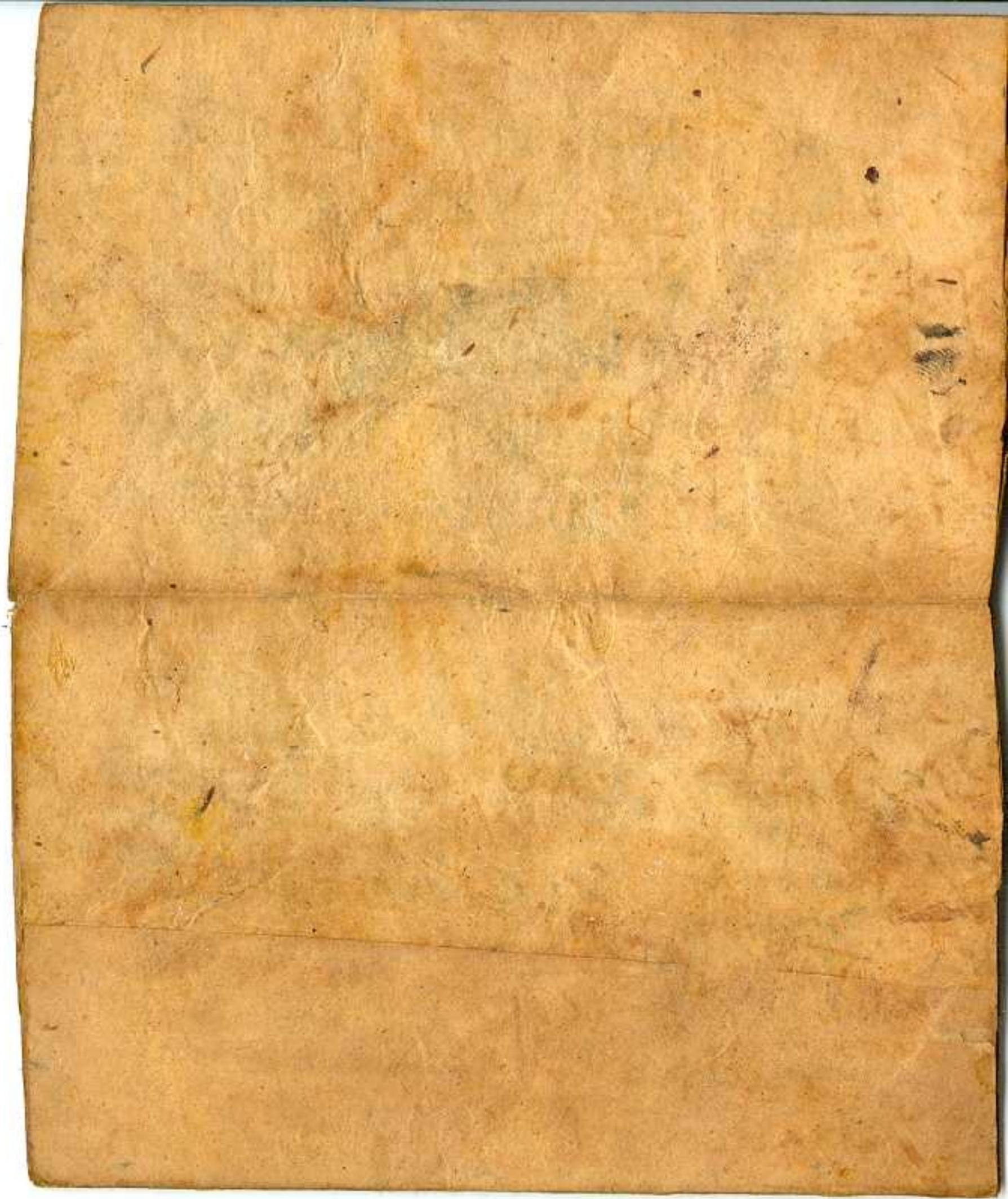
निक मत, खाल सिय माल माल कृ य मा
ल ॥ ॐ ति पृ र्ण मा सि क कृ पा वि धि ॥
स नि या द क कृ सा या ग व्या ग दा व य ज
माना दि, वि हि या दा व नि आ दि न स क
ल द ज ले द क, मा या न स र्थ दा व, प्र स व
य कल काय माल ॥ ध क कृ वा कृ स या

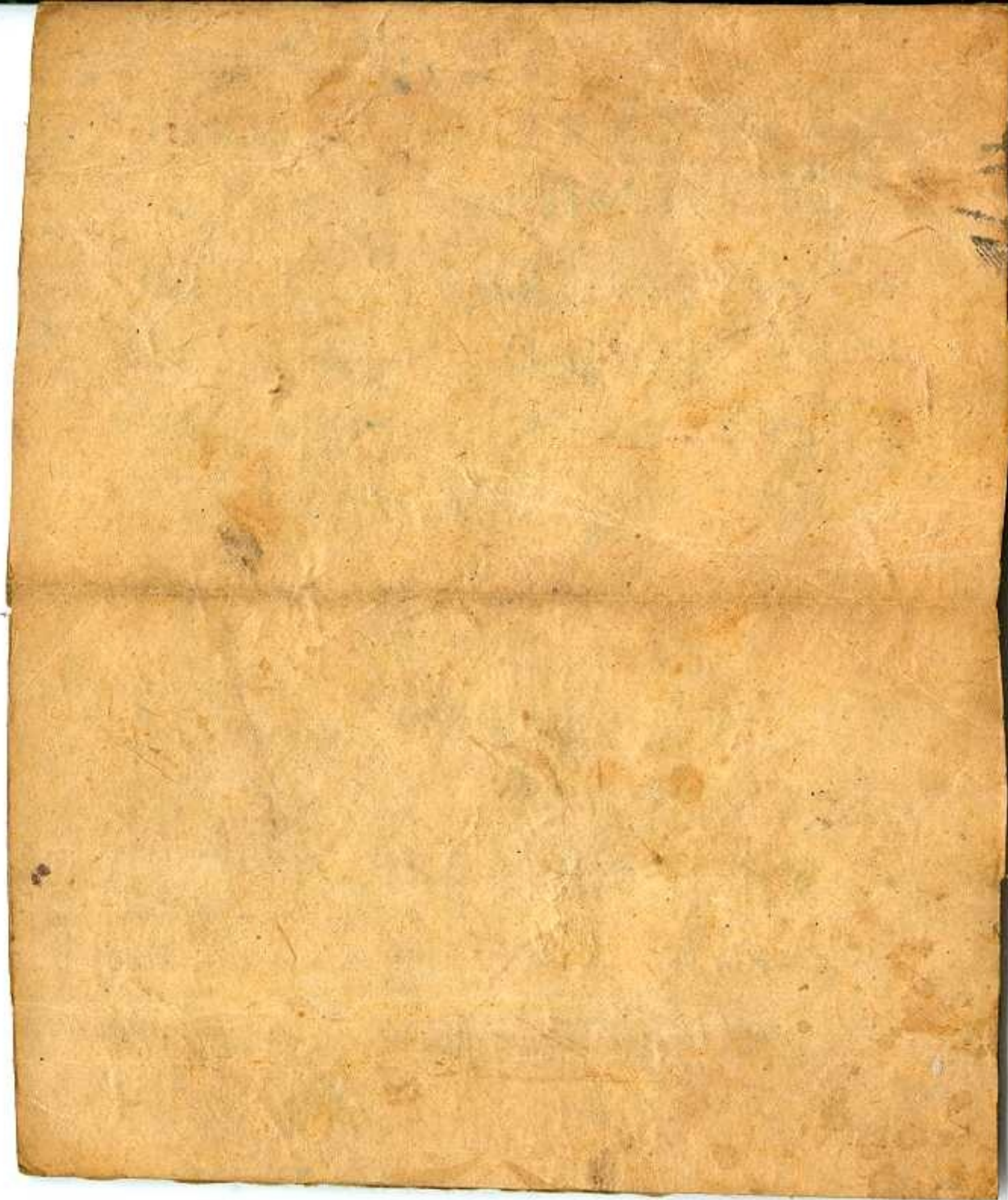
(धं सुबाय, वां विवृय के माल ॥ यडा माना
दिमिया काव निः त खाल मिथ, माल
यं माल इला ॥ ब्या त यडा १ समय १
नानवले १ था मा ग हं स क १ मालानय
नि वि स्यं काय ॥ ॥ वसि स न्या व, वृजा
मडी ना था या सु ग मा का व, वृगन समं

यं का या व, ज लं सकलं क वृय क ॥ ॥
सक ताद लि तु रुय म ग व, वृसं रुत के मा
ले ॥ आ या यं ज ल वि तय न ह, वृसं म
माल ॥ ध न ज ल वाय वि धि स मा क ॥
॥ गुरु रु व न ॥









श्रीमद्भगवद्गीता

1.020

ASMA ARCHIVES